अध्याय - 7

1.	**प्रार्थना**

दल के अगुवेः प्रार्थना करें और अपने दल और इस पाठ्यक्रम को परमेश्वर को समर्पित करें कि वे प्रभु के लिए अनेक चेले बना सकें।

2.	**आराधना** (20 मिनट)	***(परमेश्वर के विशिष्ट गुण)*** **परमेश्वर पवित्र है**

<u>परिभाषा</u>

आराधना क्या है? "आराधना" की परिभाषा है:

आराधना वह अभिव्यक्ति है जो हमारी परमेश्वर के प्रति उपासना, समर्पण और निष्ठा को प्रकट करती है। जो हम अपनी भिन्न प्रकार की प्रार्थनाओं और अपनी प्रति दिन की जीवन शैली से प्रकट करते हैं।

परमेश्वर की आराधना करने के लिए, हमें ज़रूरत है कि हम अपने परमेश्वर को जान लें कि हमारा परमेश्वर कौन है। हर आराधना के समय हम परमेश्वर के केवल एक ही विशिष्ट गुण को जान सकते हैं।

<u>मनन करेः</u>

पढ़े या शिक्षा देः मसीह के पवित्र होने की शिक्षा दें।

पढ़ेः निर्गमन 34:6-7; यशायाह 1:15-17; यशायाह 6:1-8

<u>1.पवित्रता का अर्थः</u>

शब्द पवित्रता का अर्थ दो पक्षों मे निहित है।

उससे अलग करना जो गलत और दुष्ट हैं, और सांसारिक है।

सही, अच्छे और ईश्वर के प्रति समर्पित, निष्ठावान और प्रतिबद्ध होना।

पवित्रता का अर्थ है कि चरित्र और व्यवहार पूरी तरह से सर्वोत्तम हो। चरित्र और व्यवहार केवल तभी पवित्र नहीं गिने जाते हैं जब वे एक दूसरे से जुड़े होते हैं। वह चरित्र और व्यवहार तभी पवित्र होते हैं जब वे न केवल गलत, दुष्ट और सांसारिक बातो से अलग ही नहीं होते हैं वरन जब वे सही, अच्छे और ईश्वर के प्रति समर्पित, निष्ठावान और प्रतिबद्ध होते हैं। कोई भी एक पक्ष दूसरे के बिना सम्पूर्ण नहीं होता है। सर्वोत्तम चरित्र में दोनों पक्षों का होना ज़रूरी है, अलग होना होना और समर्पित होना।

<u>2. पवित्रता और परमेश्वरः</u>

परमेश्वर पवित्र है और वह चरित्र और व्यवहार में सर्वोत्तम है।

एक तरफ परमेश्वर बुराई, और हर तरह की दुष्टता से अलग है। वह हर रूप में दुष्टता से नफरत करता है। फिर चाहे वह थोड़ी सी अपवित्रता हो या फिर बहुत सारी अपवित्रता हो।

दूसरी ओर परमेश्वर अपनी सभी दैविक विशेषताओं के प्रति समर्पित और प्रतिबद्ध है। वह समर्पित है उसके प्रति जो पूरी तरह से सही, अच्छा और दैविक है। अर्थात वह धार्मिकता में परिपूर्ण है और वह निरन्तर उनको ऊँचा उठाता रहता जो सही, अच्छा और दैविक हैं। वह समर्पित है, न्यायपूर्ण और खरा है। अर्थात वह न्याय करने में सच्चा है और अन्याय को सज़ा देगा और न्यायी को ईनाम देगा। परमेश्वर में कोई भ्रष्टाचार नहीं पाया जाता है। वह तो प्रेम के प्रति समर्पित है और उसके प्रति जो प्रेम को बढ़ावा देता है। अर्थात वह प्रेम करने में और प्रेम भरे वचन बोलने में और ऐसे

कर्म करने में जो प्रेम उत्पन्न करता है और सर्व गुण सम्पन्न है। वह अपनी योजना को पूरा करने में जो इस संसार के लिए यहाँ तक कि पूरी सृष्टि के लिए समर्पित है। अर्थात वह परमेश्वर की योजना पूरी करने के लिए सर्वगुण सम्पन्न है। स्वर्गदूत जो परमेश्वर के चरित्र और व्यवहार को हर समय देखते रहते हैं वे उसकी स्तुति करते रहते हैं और कहते है पवित्र, पवित्र, पवित्र है सर्व शक्तिमान परमेश्वर।

3.पवित्रता और संगतिः

जब यशायाह परमेश्वर की पवित्र संगति में आता है तब वह विशेष रूप से अपनी अपवित्रता को पहचान लेता है। वह कहता है, "मैं तो अपवित्र हूँ और अपवित्र लोगों के बीच रहता हूँ।"पवित्र परमेश्वर अपवित्र लोगों के साथ संगति नहीं कर सकता है और न ही करेगा। फिर भी परमेश्वर लोगों के साथ संगति करना चाहता है। और यह तभी हो सकता है जब मनुष्य की अपवित्रता दूर की जा सके। परमेश्वर ने यशायाह की अपवित्रता को दूर किया था और उसके पापों के लिए प्रायश्चित किया था। यह प्रायश्चित एक चिन्ह के द्वारा किया गया था जब परमेश्वर ने एक जलते हुए कोयले से यशायाह के होंठों को छुआ था। बाइबल में प्रायश्चित का अर्थ है अपने पाप की कीमत चुकाना जिससे परमेश्वर की धार्मिकता को समझा बुझा कर उनके क्रोध को शान्त करना है। जिससे दोषी को फिर से परमेश्वर के साथ मिला देना। क्योंकि यशायाह के पापों का प्रायश्चित हो गया था इस लिए अब वह परमेश्वर की उपस्थिति में खड़ा हो सकता था। इसी रीति से यदि हम चाहते हैं कि हम भी परमेश्वर की उपस्थिति में खड़े हो सकें तो हमें भी परमेश्वर को अनुमति और अवसर देना होगा कि वह हमारे लिए प्रायश्चित करे।

4. पवित्रता और सेवकाईः

परमेश्वर ने फिरौन, नबूकदनज़र और साइरस जैसे सांसारिक लोगों का भी प्रयोग किया है जिससे इतिहास में अपनी योजनाओं को पूरा कर सके। लेकिन पवित्र परमेश्वर किसी भी अपवित्र जन को आत्मिक सेवा में इस्तेमाल नहीं करेगा। एक अपवित्र भविष्यद्वक्ता कभी भी लोगों के सामने एक पवित्र परमेश्वर का दूत नहीं बन सकता है। लेकिन अब जब परमेश्वर ने यशायाह के पापों के लिए प्रायश्चित कर दिया है तो अब परमेश्वर ऐसा कर सकता है और चाहता भी है कि वह एक भविष्यद्वक्ता के रूप में उसकी सेवा करे। और परमेश्वर ने वास्तव में यशायाह को अपनी सेवकाई करने दी थी। इसी रीति से यदि हम परमेश्वर की सेवकाई करना चाहते हैं तो हमें परमेश्वर को अनुमत देनी होगी कि वह हमारे पापों के लिए प्रायश्चित करे।

आराधनाः
छोटा दल बना कर परमेश्वर की आराधना करें।

3.	**गवाही बाँटना** (20 मिनट)	***[शान्त समय]*** **मत्ती 22:1 – 25:13**

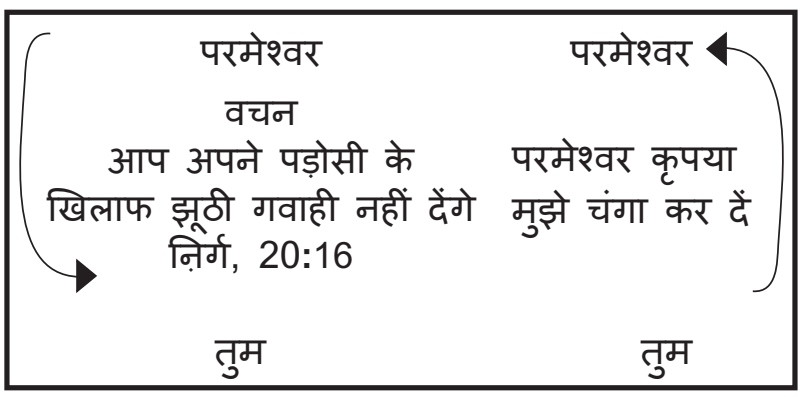
बारी-बारी से अपनी गवाही बाँटे या अपने नोट्स से पढ़ेः संक्षेप में जो कुछ भी आपने परमेश्वर के साथ अपने निजि समय में सीखा था उस लेखाँश से जो आपको दिया गया था।
(मत्ती 22:1 – 25:13)
जो भी गवाही बाँट रहा है उसे ध्यान से सुने और उसे मान ले। कोई बहस न करें।

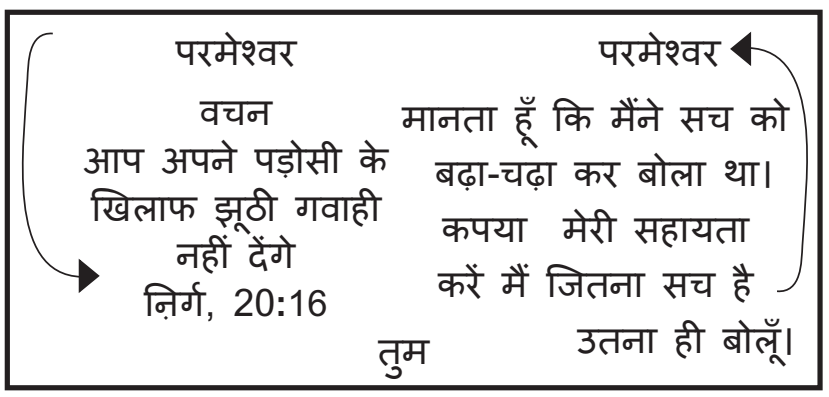
4.	**बाइबल शिक्षा** (70 मिनट)	***प्रार्थना*** **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर के लिए प्रार्थना**

क.प्रार्थना क्या है?

1.प्रार्थना परमेश्वर के साथ दो तरफा बातचीत है।

नीचे दिये चित्र में क्या अन्तर है?



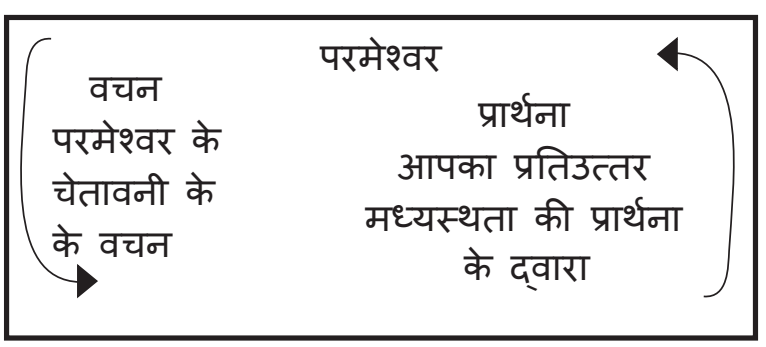


नोट्सः यह एक तरफा बातचीत है। इसमे आप अपनी प्रार्थना में परमेश्वर को उसका कोई प्रतिउत्तर नहीं देते है (जैसा बाइबल में लिखा है)	यह दो तरफा बातचीत है। आप प्रार्थना में जो परमेश्वर की बात का प्रतिउत्तर देते हैं।

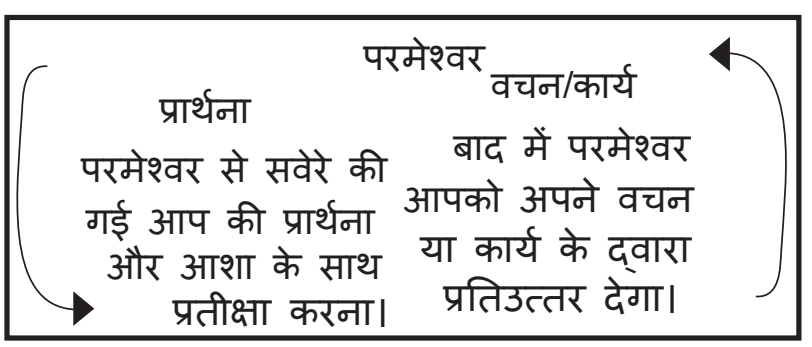
प्रार्थना के दौरान परमेश्वर और अब्राहम ने एक दूसरें से कितनी बार बातचीत की होगी?
पढ़ेः उत्पत्ति 18:17-33
नोट्सः इस प्रार्थना के दौरान परमेश्वर ने 7 बार बात की थी और अब्राहम ने 6 बार। यह प्रार्थना स्पष्ट रूप से बताती है कि प्रार्थना परमेश्वर और मनुष्य के बीच की गई बातचीत है। जिस में दोनो बारी बारी से बात करते हैं।

यह दो तरफा बातचीत कौन शुरू कर सकता है?
पढ़ेः भजन 5:3
नोट्सः आप या परमेश्वर कोई भी इस दो तरफा बातचीत को शुरू कर सकता है। उत्पत्ति 18 में परमेश्वर ने पहले अब्राहम को दिखाया था क वह सदोम और गमोरा जैसे दुष्ट नगरों के साथ क्या करने वाला था। तब अब्राहम ने प्रतिउत्तर में इन नगरों के धर्मी लोगों के लिए प्रार्थना करनी शुरू की थी। भजन 5 में दाऊद ने पहले प्रार्थना की थी और फिर परमेश्वर के प्रति उत्तर की आशा में बैठा रहा था।

उत्पत्ति 18



भजन 5:3



संक्षिप्त वर्णनः प्रार्थना परमेश्वर और मनुष्य के बीच दो तरफा बातचीत है जिसे आप या परमेश्वर कोई भी शुरू कर सकता है।

2. प्रार्थना परमेश्वर के शब्दों और कर्मो के विषय में भिन्न तरह का प्रतिउत्तर होता है।

परमेश्वर क्या कहते व करते हैं? और लोगों की प्रतिक्रिया क्या होती है?
पढ़ेः नीचे लिखे बाइबल के संदर्भों को पढ़े।

परमेश्वर बोलता है या करता है	हम प्रार्थना में उसका प्रति उत्तर देते हैं
1.भजन 33:1-4 परमेश्वर का वचन सही और सच्चा है। परमेश्वर के कार्य विश्वासयोग्य हैं। **2.भजन 51 मुख्य वचनः 4,10-12** परमेश्वर के वचन नातान भविष्यद्वक्ता के द्वारा जिसने पाप का न्याय किया था। **3.भजन 119:33-37** परमेश्वर अपने वचनो को अपने नियमों में, आज्ञाओं में, विधियों और वायदों के साथ बोलता है। **4.उत्पत्ति 18:17,20,26** परमेश्वर दूसरों की ज़रूरतों को प्रकट करता है। **5,भजन 107:4-15** परमेश्वर हर दुख से बचाता है।	**1.स्तुतिः** प्रार्थना करके, संगीत बजा कर और गीत गा कर। **2.अंगीकार करनाः** अपने पाप का अंगीकार करके परमेश्वर से क्षमा माँग कर शुद्ध करने की माँग करें। **3.माँगोः** परमेश्वर से अपने जीवन में सही समझ, मार्गदर्शन और वह सहायता माँग लें जिसके द्वारा परमेश्वर की नज़रों में पाप करने से बच जाएँ। **4.मध्यस्थ बनो** परमेश्वर से मिलो और दूसरों कि ज़रूरत क लिए विनती करो **5.धन्यवाद करो** परमेश्वर का उसके कभी असफल न होने वाले प्रेम के लिए धन्यवाद करें।

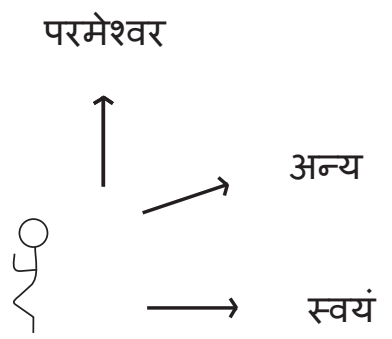
संक्षिप्त वर्णनः
प्रार्थना एक प्रतिउत्तर है जो परमेश्वर के वचन या कार्य के लिए 5 भिन्न रूप में दिया जा सकता है।
प्रार्थना एक प्रति उत्तर है स्तुति करने का, अंगीकार करने का, किसी माँग के लिए विनती करने का मध्यस्थता का या फिर धन्यवादी का।

3. प्रार्थना करने के भिन्न लक्ष्य होते हैं।

नीचे दी गई प्रार्थनाओं का लक्ष्य क्या है?

पढ़ेः नीचे लिखे बाइबल के लेखाँश पढ़ें।

नोट्सः

भजन 77:7-14,19 यह प्रार्थना परमेश्वर पर उसके चरित्र, वचनों और कर्मो पर केन्द्रित है। **कुलुसियों 1:9-12** इस प्रार्थना का केन्द्र अन्य लोग हैं और उनकी ज़रूरते हैं। **भजन 31:2-5**इस प्रार्थना का केन्द्र स्वयं पर है आपकी निजि ज़रूरतें और इच्छाएँ।	

संक्षिप्त विवरणः
प्रार्थना का केन्द्र परमेश्वर उसका चरित्र उसके वचन या कर्मों पर हो सकता है
प्रार्थना का केन्द्र दूसरे लोग उनकी ज़रूरतें और इच्छाएँ हो सकती हैं।
प्रार्थना का केन्द्र आप स्वयं या आपकी इच्छाएं हो सकती हैं।

ख. प्रार्थना और दृष्टिकोण

खोजें और उस पर विचार विमर्श करें प्रार्थना करते समय कौन सी मानसिक स्थिति और व्यवहार महत्त्वपूर्ण है?

1. नम्रताः

पढ़ेः नीति वचन 3:5-6; 1 युहन्ना 5:14
नोट्सः अपने मन को और उसमें बसे विचारो और उद्देश्यों को परमेश्वर के मन को समर्पित कर दें। परमेश्वर घमण्डी लोगों का सामना करते हैं और जो अपनी समझ पर भरोसा करते हैं।(1 पतरस 5:5-6)

2. एक क्षमा करने वाली आत्माः

पढ़ेः मरकुस 11:25
नोट्सः जिस किसी ने आपके विरुद्ध गलत किया है उसे क्षमा कर दें। कभी भी नाराज़ या बदला लेने की भावना न रखें। यदि आप क्षमा नहीं करेंगे तो परमेश्वर भी आपको क्षमा नहीं करेगा।
(मत्ती 6:14-15; भजन 66:**18)**

3. ईमानदारीः

पढ़ेः मत्ती 6:5-8
नोट्सः हर प्रलोभन का सामना करें जिससे लोग आपकी प्रार्थना से प्रभावित हों।
यदि आप को अच्छा लगता है कि लोग आपको प्रार्थना करते सुने तब आपको परमेश्वर से प्रतिफल नहीं मिलेगा।

ग. व्यवहारिकताः परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में भिन्न प्रार्थनाएँ

1. प्रार्थना जो आप परमेश्वर के साथ अपने निजि समय में करते हैः

शिक्षा देः अपने मनपसन्द सत्य पर मनन करने के बाद आप अपने मनपसन्द सत्य के प्रतिउत्तर में परमेश्वर से प्रार्थना करें। अपने मनपसन्द सत्य के विषय में अपने लिए प्रार्थना करें, या परिवार के किसी प्रियजन के लिए, किसी पड़ोसी के लिए, यै किस ऐसे के लिए जो दूर रहता हो, प्रार्थना करें। जब कभी आप एक मित्र के साथ प्रार्थना करते हैं तब आप अपने मित्र के मनपसंद सत्य के विषय में प्रार्थना करें अर्थात आप एक दूसरे कि लिए प्रार्थना करें।

2. बाइबल अध्ययन के दौरान परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना करनाः

शिक्षा देः जब आप बाइबल के लेखाँश का अध्ययन कर चुके हैं तब उन महत्त्वपूर्ण सत्यों के विषय में जो आपने सीखे हैं उनके विषय में प्रार्थना करें। यह परमेश्वर के वचन के विषय में आपकी प्रतिक्रिया होगी। विशेषकर इसके लिए प्रार्थना करें और परमेश्वर से पूछें कि वह बाइबल के इन सत्यों को आपके जीवन में कैसे लागू करना चाहता है।

3. बाइबल पठन के दौरान परमेश्वर के वचन के प्रति आपकी प्रतिक्रियाः

शिक्षा देः जब आप एक बाइबल का लेखाँश पढ़ चुके हों और उसके अर्थ को समझ चुके हों तब आप उन वचने में लिखे हर सत्य के लिए प्रार्थना करें। यही परमेश्वर के वचन के लिए आपकी प्रतिक्रिया होगी। इस प्रार्थना को पवित्र वचन की प्रार्थना कहा जाता है।

5.	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***(प्रतिक्रियाएँ)*** **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना**

भाग करेः पूरे दल को 3-3 सदस्यों के दल में बाँट लें। फिर भजन 34:1-21 से हर व्यक्ति 1 या 2 पद पढ़े और हर व्यक्ति के पढ़ने के तुरन्त बाद ही उन पदों के विषय में छोटी सी प्रार्थना करे, इससे पहले कि अगला व्यक्ति अगले पदों को पढ़े।

6.	**तैयारी** (2 मिनट)	***निर्धारित कार्य*** **अगले पाठ के लिए**

दल के अगुवेः दल के सदस्यों को यह तैयारी घर से करने को लिखित में दें। और उसे कापी में उतारने को कहें।

1.<u>समर्पणः</u> प्रार्थना करें कि जब कभी परमेश्वर आप से बात करेगा तब आप स्वयं को प्रतिउत्तर देने के लिए समर्पित करेंगे।

2.<u>परमेश्वर के साथ निजि समयः</u> परमेश्वर के साथ एक निजि समय निर्धारित करें जिस में मत्ती 25:14 – 28:3 से हर दिन आधा अध्याय पढ़ेंगे। और सत्य खोजने के लिए अपने मनपसंद तरीके का प्रयोग करेंगे। अपने नोट्स बनाएँ।

3.<u>बाइबल अध्ययनः</u> अगले बाइबल अध्ययन को घर पर तैयार करें। इफीसियों अध्याय 4:17-5:17 आपकाविषय होगा “मैं यहाँ क्यों हूँ?”

4. <u>प्रार्थनाः</u> किसी विशेष व्यक्ति या किसी विशेष चीज़ के लिए प्रार्थना करें कि इस हफ्ते परमेश्वर आपके लिए क्या नया कर रहा है। (भजन 5:3)

5.<u>अपनी कापी को पूरा करेः</u> आपने कितने चेले बनाए, इसके साथ वह सभी नोट्स जो आपने परमेश्वर के साथ निजि समय बिताते समय सीखा, और जो पद आपने याद किए थे। साथ ही आपके बाइबल अध्ययन के नोट्स भी लिख लें।